NJESR/November-2022/Volume-4/Issue-11 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2022.4.11.80-88

हिंदी संत कवियों की परंपरा एवं विकास

सोनिया
हिंदी विभाग
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय
रोहतक

(Received:20October2022/Revised:29October2022/Accepted:15November2022/Published:27November2022)

सारांश

हिंदी साहित्य के भक्ति काल में **निर्गुण और सगुण** दो काव्य धाराएं विकसित हुई। *निर्गुण काव्यधारा की दो शाखाओं में विभाजित किया गया संत काव्य धारा तथा सूफी काव्य धारा। संत काव्य धारा को ज्ञानमार्गी या ज्ञानाश्रयी शाखा भी कहा जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निर्गुण संत काव्य धारा को निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा नाम दिया।आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इसे निर्गुण भक्ति साहित्य कहते हैं। रामकुमार वर्मा केवल संत-काव्य नाम से संबोधित करते हैं।* **'संत'** शब्द से आशय उस व्यक्ति से है, जिसने सत परम तत्व का साक्षात्कार कर लिया हो । साधारणत: ईश्चर-उन्मुख किसी भी सज्जन को संत कहते हैं, लेकिन वस्तुत: संत वही है जिसने परम सत्य का साक्षात्कार कर लिया और उस निराकार सत्य में सदैव तल्लीन रहता हो । संत मत' का अर्थ है - 'संतों का मार्ग', 'सत्य का मार्ग', 'सही और आशावादी पथ' या 'संतों की राय'. 'संत' शब्द संस्कृत की धातु 'सद्' से बना है और कई प्रकार से प्रयोग हआ है (सत्य, वास्तविक, ईमानदार, सही). इसका मूल अर्थ है 'सत्य जानने वाला' या 'जिसने अंतिम सत्य अनुभव कर लिया हो। 'संत' शब्द से अर्थ आम तौर पर एक अच्छे व्यक्ति से लिया जाता है लेकिन इसका विशेष अर्थ मध्यकालीन भारत के संत कवियों से ही लिया जाता है। स्पष्टत: संतों ने धर्म अथवा साधना की शास्त्रीय ढ़ंग से व्याख्या या परिभाषा नहीं की है । संत पहले संत थे बाद में कवि। उनके मुख से जो शब्द निकले वे सहज काव्य रूप में प्रकट हुए।

"डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने संत का संबंध शान्त से माना है और इसका अर्थ उन्होंने किया है - निवृत्ति मार्गी या वैरागी। "

परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास में निर्गुण भक्ति के ज्ञानमार्गी भक्तों को संत कवि कहा गया है | इन संत कवियों द्वारा प्रतिपादित काव्य धारा को संत काव्य कहा जाता है | 'संत' से अभिप्राय उस व्यक्ति या व्यक्तियों के उस समूह से है जिसने सत्यरूप परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया है और शुद्ध जीवन जीते हुए निःस्वार्थ भाव से लोक कल्याण में रत है। हिन्दी में 'संत-काव्य' से आशय है– कबीर आदि निर्गुणोपासक ज्ञानमार्गी कवियों द्वारा रचित काव्य। भक्तिकाल की विषम सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में इन संत कवियों ने ज्ञान की आंधी और प्रेम की बारिश के द्वारा जन सामान्य में आशा की ज्योति विखेरने का अतुलनीय कार्य किया | निर्गुण भक्ति के प्रेममार्गी कवियों को सूफ़ी कवि कहा गया है |

संत काव्य परंपरा

संत काव्य परंपरा भक्तिकाल की आरम्भिक काव्यधारा है। इसका संबंध निर्गुण भक्ति से है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे ज्ञानाश्रयी शाखा कहा है। निर्गुण भक्त कवि अधिकांश निम्न जाति के थे। उन्हें मंदिरों में प्रवेश की मनाही थी। ईश्वर से वंचित किये गये इन जातियों ने तब ईश्वर को अपनी कल्पना में गढ़ा, जिसमें ईश्वर के प्रचलित रूप के विरोध की भी भावना थी। इसलिए इस धारा के संत कवियों ने अपनी उपासना का आधार गुणातीत ब्रह्म को

बनाया है। संत काव्य तत्कालीन सामंतवादी और रुढ़िवादी परिवेश में मानवतावादी चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति है। यह उस सांस्कृतिक जागरण की सशक्त अभिव्यक्ति है, जो गहरे मानवीय सरोकारों से उपजी है और सार्वभौमिक मानव मूल्यों को प्रतिष्ठापित करता है|

वस्तुतः संत काव्य परम्परा के लिए पृष्ठभूमि बहुत पहले से तैयार हो रही थी | पूर्व में बौद्ध धर्म वज्रयान और सहजयान में परिणत हो गया था | दक्षिण से चला वैष्णव संप्रदाय पूरे देश में प्रभाव जमाने लगा था जिसका नाथ पंथ और अन्य सम्प्रदायों से वैचारिक आदान-प्रदान होने लगा था | इनके बीच में इस्लाम के समानता के सिद्धांत ने अपनी पैठ बनायीं | इन सभी ने संत काव्य के दार्शनिक आधार को तैयार करने में योगदान दिया | शंकराचार्य एवं उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित अद्वैत दर्शन, नाथपंथ, सूफी धर्म एवं इस्लाम दर्शन इन सबों का एकीकृत रूप ही संत काव्य का दार्शनिक आधार है। उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म, जीव, जगत एवं माया के स्वरूप को संतों ने ज्यों का त्यों ग्रहण किया है। इनका साधना पक्ष शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन की देन है। नाथ पंथ से संतों ने शून्यवाद, योगसाधना, गुरू की महिमा का तत्व ग्रहण किया। इस्लाम के प्रभाव से संतों ने एकेश्वरवाद को स्वीकार किया तथा मूर्तिपूजा एवं अवतारवाद का घोर विरोध किया। सूफी संतों से प्रेम भावना को ग्रहण करने के साथ-साथ दाम्पत्य प्रतीकों का प्रयोग अपनी भक्ति की अभिव्यक्ति हेतु किया। बौद्धों एवं वैष्णवों से इन्होंने अहिंसावाद को ग्रहण किया। सिद्ध सम्प्रदाय की गूढ़ उक्तियाँ, उलटबांसियाँ, वैदिक परम्पराओं एवं धार्मिक बाह्याचार का विरोध भी संत काव्य में मिलता है।

संत कवियों की परम्परा का आरम्भ बारहवीं शताब्दी में जयदेव से होता है | उनके निर्गुण भाव के पद आदिग्रन्थ में संकलित हैं | तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम आदि संत इस परम्परा को आगे बढ़ाते है | इसके बाद कबीरदास के गुरु रामानंद आते है | लेकिन हिंदी में संत काव्य की परंपरा के सूत्रपात का श्रेय कबीरदास को है | रविदास, सेना, पीपा, पद्मावती, सुरसुरी और धन्ना कबीर के गुरु भाई थे | इस परंपरा में आगे चलकर अनेक पंथों की स्थापना हुई | कबीर के अनुयायियों द्वारा स्थापित कबीर पंथ के अतिरिक्त नानक के पंथ, दादू के दादू पंथ और मलूक दास के मलूक पंथ अस्तित्व में आते गए | कबीर ने संत मत के निश्चित सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया | कबीर से शुरू हुई संत काव्य परंपरा में दादू, गुरु नानक, सुन्दर दास, गरीब दास, धर्मदास, जगजीवन साहब, जम्भ दास, मलूक दास, हरिदास, चरण दास, गुलाब साहब आदि कवि हुए है |

कबीर, नानक, दादू, मलूक आदि सभी संत कवियों की वाणी जीवन के प्रति आस्था से निकली हुई है, मानवीय सरोकारों से गहरे जुडी हुई है इसलिए वह हृदय की अतल गहराइयों से निकली हुई है। वह “अनभै सांचा” है अर्थात् अनुभव सत्य और अनभय सत्य से युक्त | संत कवियों का मूल्य-बोध सामजिक यथार्थ से उपजा है। जिस परिवेश में संत कवियों ने अपनी पीयूषवर्षिणी वाणी से जन सामान्य को चेतना प्रदान की वह समाज क्षयशील प्रवृतियों से ग्रस्त समाज था | वह अज्ञान, अशिक्षा और अनैतिकता का युग था। जीवन के आदर्शों का पतन होने लगा था, मानवता की भावना का लोप हो चला था, मानवीय सद्वृतियाँ- प्रेम, क्षमा, करुणा, शील, सेवा, त्याग एवं अहिंसा जैसे चिरंतन मूल्य लुप्त प्राय होने लगे थे | मानव-धर्म जाति, वर्ग, संप्रदाय आदि में विभक्त हो चला था और जन समुदाय भावनात्मक रूप से विखरता जा रहा था | ऐसे परिवेश में अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, पशुता से मानवता की ओर, विनाश से सृजन की ओर, और अंत में असीम से ससीम की ओर ले जाने का श्रेय संत कवियों को है | संत-काव्य हमारी संवेदनाओं को मानवीयता से जोड़ता है, मनुष्यता की नयी परिभाषा करता है तथा नया धर्म रचता है। यह नया धर्म ही "लोकधर्म" है और इसी लोकधर्म के प्रति समूचा संत-काव्य समर्पित है। डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं - "संत-साहित्य भारतीय जनता के प्रेम, घृणा, आशाओं और वेदना का दर्पण है। वह उसके हृदय की सबसे कोमल, सबसे सबल भावनाओं का प्रतिबिम्ब है। उसकी मानवीय सहजता लौकिक जीवन में आस्था और उज्ज्वल भविष्य की कामना का प्रतीक है।"

हिंदी संत काव्य धारा

हिंदी साहित्य के भक्ति काल को अगर कालक्रम की दृष्टि से देखा जाए तो हिंदी सन्त काव्य का प्रारम्भ निर्गुण काव्य धारा से होता है | आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने नामदेव और कवीर द्वारा प्रवर्तित भक्ति धारा को 'निर्गुण ज्ञानाश्रयी धारा' की संज्ञा प्रदान की है | डा. रामकुमार वर्मा ने इसे 'सन्त काव्य परम्परा' जैसे विशेषण से अभिहित किया है | आचार्य हजारी प्रसाद व्दिवेदी ने इसे 'निर्गुण भक्ति साहित्य' का नाम दिया है | निर्गुण काव्य धारा मे सन्त काव्य का विशेष महत्व है | संत काव्य धारा को ज्ञानश्रयी शाखा भी कहा जाता है |

'सन्त' शब्द की ब्युत्पत्ति -

सदाचार के लक्षणों से युक्त व्यक्ति को सन्त कहा जाता है | इस प्रकार का व्यक्ति आत्मोन्नति एवं लोक मंगल मे लगा रहता है | डा. पीताम्बर दत्त बडथ्वाल ने सन्त का सम्बंध शान्त से माना है और इसका अर्थ उन्होने किया है - निवृत्ति मार्गी या वैरागी |

डा. शिवकुमार शर्मा के अनुसार -

सन्त शब्द सत से बना है जिसका अर्थ है - ईश्वरोन्मुखी कोई भी सजग पुरूष |

प्रमुख सन्त कवि और उनकी रचनाएँ -

ज्ञानाश्रयी शाखा या सन्त काव्य धारा के प्रमुख कवियों एवं उनकी रचनाओ का विवरण इस प्रकार है -

1.रामानन्द -

रामानन्द जी के आविर्भाव काल , निधन काल , जीवन चरित आदि के सम्बंध मे कोई प्रामाणित सामग्री उपलब्ध नहीं है | ये लगभग 15 वीं शती के उत्तार्द्ध मे हुए थे | 'श्री भक्तमाल सटीक' के अनुसार इनका जन्म प्रयाग मे कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल मे हुआ था | इनकी शिक्षा - दीक्षा काशी मे हुई | इनके गुरु का नाम राघवानन्द था | जो काशी मे रहते थे |

ये रामानुजाचार्य परम्परा के शिष्य थे | इनकी समय मे दिल्ली का सुल्तान सिकंदर लोदी था | रामानन्द ने अपने ग्रंथ 'श्रीरामार्चन पद्धति' मे अपनी पूरी गुरु परम्परा का वर्णन किया है | रामानन्द से पहले रामानुज सम्प्रदाय मे केवल व्दिजातियों को ही दीक्षा दी जाती थी | परन्तु रामानन्द ने राम भक्ति के व्दार सब जातियों के लिये खोल दिया | भक्त माल के अनुसार इनके शिष्यो के नाम इस प्रकार है - अनन्त दास , सुखानन्द , सुरसुराननन्द , नरहर्यानन्द , भवानन्द , पीपा , कबीर , सेन , धन्ना , रैदास , पद्मावती और सुरसुरी| रामानन्द के इन 12 शिष्यो में , सेन - नाई , कबीर - जुलाहा और रैदास चमार थे | रामानन्द ने काशी मे रामावत सम्प्रदाय के स्थापना की |

2.नामदेव -

ये महाराष्ट्र के भक्त के रुप मे प्रसिद्ध है | सतारा जिले के नरसी बैनी गांव मे सन् 1267 ई0 मे इनका जन्म हुआ था | इनके गुरु का नाम सन्त विसोवा खेवर था | नामदेव मराठी और हिंदी दोनो भाषाओ मे भजन गाते थे | उन्होने हिन्दू और मुस्लमान की मिथ्या रूढियों का विरोध किया | उदाहरण स्वरुप -

हिन्दू अन्धा तुरको काना, दुऔ से ग्यानी सयाना |
हिन्दू पूजै देहरा, मुस्लमान मसीख ||

3.कबीरदास -

कबीर सन्त परम्परा के प्रमुख और प्रतिनिधि कवि है | इनके जीवन के विषय मे प्रामाणित साक्ष्य उपलब्ध नही है | जनश्रुतियों के अनुसार कबीर का जन्म 1398 ई0 मे और मृत्यु 1518 ई0 मे हुई | कहा जाता है कि कबीर किसी विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे | उसने अपनी लोक ,लाज के भय से बच्चे के लहरतारा नामक तालाव मे फेंक आयी | नीरु और नीमा नामक जुलाहे ने बच्चे का लालन - पालन किया | यही बच्चा बाद मे बडा होकर कबीर

के नाम से जाना गया | कबीर के पत्नी का नाम लोई तथा पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था | कबीर के गुरु रामानन्द थे |

कबीर अनपढ थे | उनके शिष्यो ने कबीर की वाणीको सजोकर रखा तथा बाद मे पुस्तक का आकार दिया | इनकी रचना 'बीजक' नाम से जानी जाती है | कबीर ने मूर्ति पूजन , तीर्थब्रत , पूजापाठ का विरोध किया | कबीर जीवन भर सामाजिक अंधविश्वासो का विरोध किये तथा समाजिक बुराइयों का भी विरोध किया |

4.दादूदयाल -

दादूदयाल का जन्म 1544 ई0 मे अहमदाबाद मे हुआ था | तथा इनकी मृत्यु 1603 ई0 मे मानी जाती है | दादू पन्थ के लोग कहते है कि ये किसी ब्राम्हण को साबरमती मे बहते हुए पानी मे मिले थे | एक अन्य जनश्रुति के अनुसार इन्हे मुसलमान (धुनिया) का पुत्र माना जाता है | इनका मूल नाम दाऊद बताया गया है | ये अन्य स्रोत मे इनका पहला नाम महाबली बताया गया है |

दयालुता के कारण इन्हे दादूदयाल कहा जाने लगा | इनकी वाणी से पता चलता है की वे कबीर को अपना गुरु मानते थे | दादू की वाणी एक प्रकार से कबीर की वाणी की ही ब्याख्या है | कहा जाता है कि दादू के 52 शिष्य थे | इनके प्रमुख शिष्यो मे रज्जब , सुन्दरदास , जगन्नाथ दास , प्रागदास , जनगोपाल आदि | इनके पंथ को 'परम ब्रम्ह सम्प्रदाय' भी कहा जाता है |

दादूदयाल के दो शिष्य सुन्दरदासऔर जगन्नाथ दास ने 'हरडेवाणी' शीर्षक से इनकी रचनाओ का संकलन किया | 'अंग वधू' इनका प्रसिद्ध काव्य संग्रह है , जिसका संकलन उनके शिष्य रज्जब ने किया |

5.रैदास या रविदास -

मध्ययुगीन सादको मे रविदास का प्रमुख स्थान है | इनका जन्म काशी मे हुआ | जन्म काल के विषय मे बडा मत भेद है | डा. भण्डारकर और भक्त माल के आधार पर इनका जन्म 1200 ई0 मे हुआ था | डा. भगवत स्वरुप मिश्र ने यह निष्कर्ष दिया कि इनका जन्म 1398 ई0 तथा मृत्यु 1448 ई0 है | ये जाति के चमार थे |

इन्हे स्वामी रामानन्द ने दीक्षा दी थी | इन्हे मीराबाई का गुरु भी माना गया है | रैदास की पत्नी का लोना था | संत वाणी सीरीज के अंतर्गत इनकी रचनाओ का संकलन 'रविदास की वाणी' शीर्षक से प्रकासित हुआ है | इनके लिखे हुए चालीस पद गुरु ग्रंथ साहब मे भी संकलित है | रैदास सिकंदर लोदी के निमंत्रण पर दिल्ली भी गये थे |

रविदास की एक कविता का उदाहरण प्रस्तुत है -

अब कैसे छूटे राम, नाम रट लागी |
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग - अंग वास समानी |
प्रभु जी तुम धन बन हम मोरा, जैसे चितवन चन्द्र चकोरा |
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती |
प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा |
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करे रैदासा ||

6.गुरु नानक देव -

सिख सम्प्रदाय के गुरुनानक देव इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति है | गुरुनानक जी का जन्म 1469 ई0 मे तलवण्डी मे हुआ था | जो अब ननकाना साहब के नाम से जाना जाता है | नानक के पद गुरु ग्रंथ साहब मे संकलितहै | इनकी मृत्यु 1538 ई0 मे हुई थी | इनके पिता का नाम कालूचन्द्र और माता का नाम तृप्ता था | इनके दो पुत्र भी हुए है , जिनके नाम है - लक्ष्मीचन्द्र और श्रीचन्द्र |

इनकी रचनाएँ निम्न है -

(i)जपुजी
(ii)असा दीवार
(iii)रहिरास
(iv)सोहिला

7.हरिदास निरंजनी -

इन्होने निरंजनी सम्प्रदाय की स्थापना किया था | इस सम्प्रदाय को नाथ पंथ एवं संत काव्य के बीच की कडी माना जा सकता है | इनके मत का सर्वप्रथम प्रचार उडीसा मे हुआ था | इनकी रचनाओ का विवरण निम्नलिखित है -

(i) ब्रह्मस्तुति
(ii)अष्टपदी
(iii)जोगग्रंथ
(iv)हंसप्रबोध ग्रंथ
v)निरपखमूल
(vi)पूजायोग ग्रंथ
(vii)समाधिजोग ग्रंथ

8.मलूकदास -

मलूकदास का जन्म 1574 ई0 मे इलाहाबादके कडा गांव मे हुआ था | इनका पिता का सुंदरलाल खत्री था | इनका जन्म अकबर के समय मे तथा इनकी मृत्यु औरंगजेब के राज्य काल मे हुआ | इनकी मृत्यु सन 1682 ई0 मे हुई | मलूकदास ने अवधी और ब्रज भाषा मे रचना की है |

इनके लिखे ग्रंथो के नाम निम्नलिखित है -

(i)ज्ञान बोध
(ii)रतन खान
(iii)भक्तवच्छावली
(iv)भक्ति विवेक
(v)ज्ञान परोछि
(vi)बारहखडी
(vii)रामअवतार लीला
(viii)ब्रजलीला
(ix)ध्रुवचरित
(x)विभवविभुति
(xi)सुखसागर

आलसियों का प्रसिद्ध दोहा मलूकदास का ही रचा हुआ है | जो इस प्रकार है -

अजगर करै न चाकरी , पंछी करै न काम |
दास मलूका कहि गये , सबके दाता राम ||

9.सुन्दरदास -

निर्गुण संत कवियों मे सुन्दरदास सर्वाधिक प्रतिभाशाली एवं शिक्षित थे | इनका जन्म सन 1596 ई0 मे जयपुर राज्य की राजधानी दौसा मे हुआ था |

ये खंडेलवाल जाति के थे | इन्हे लिखे ग्रंथ निम्न है -

(i)ज्ञानसमुंद्र

(ii)सुंदरविलाश

सुंदरदास ने श्रृंगार रस का खुल कर विरोध किया |

10. धर्मदास -

ये बांधोगढ के निवासी थे | कबीर से इनका गहरा वाद विवाद हुआ था | अन्ततोगत्वा , ये कबीर से प्रभावित होकर निर्गुण ब्रहम के उपासक बन गये | धर्मदास ने ही 'बीजक' मे कबीर की रचनाएँ संकलित की | धर्मदास के प्रमुख रचना 'सुखनिधान' है |

11. सींगा -

संत सींगा का जन्म मध्य भारत की रियासत बडवानी के खजूर गांव के एक ग्वाल परिवार मे हुआ था | उनकी काव्य भाषा निमाडी है |

सींगा जी की रचनाओ का विवरण इस प्रकार है -

(i)सींगा जी का दृढ उपदेश

(ii)सींगा जी का आत्मध्यान

(iii)सींगा जी का दोष बोध

(iv)सींगा जी का नरद

(v)सींगा जी का शरद

(vi)सींगा जी की वाणी

(vii)सींगा जी की वाणावली

(viii)सींगा जी का सातवार

(ix)सींगा जी की पन्द्रह तिथि

(x)सींगा जी का बारहमासा

(xi)सींगा जी के भजन

12. शेख फरीद (1472 ई0 - 1552 ई0) -

शेख फरीद पंजाब के सन्त कवियों मे उल्लेखनीय हैं | इन्हे शकरगंज भी कहा जाता है | आदि ग्रंथ मे इनके चार पद संकलित हैं |शेख फरीद चार वर्ष की आयु मे कुरान याद कर लिये थे |

13. गुरु अंगद -

गुरु अंगद ने गुरु मुखी अक्षरों का संस्कार दिया और लंगर प्रथा चलायी | गुरु अंगद ने नानक की रचनाओं का संकलन किया, और ब्रजभाषा मिश्रित पंजाबी मे सरस गेय पदो की रचना की |

14. गुरु अमरदास (1479 ई0 - 1574 ई0) -

ये पहले वैष्णव थे, बाद मे गुरु नानक का एक पद सुनकर इनकी ओर आकृष्ट हुए | 15. गुरु अर्जुन देव - (1563 ई0 - 1606 ई0) - इनका सर्वप्रमुख कार्य आदि ग्रंथका सम्पादन व संकलन है | ये एक अच्छे कवि थे |

गुरु ग्रंथ साहिब मे उनके 6000 पद संकलितहै | इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित है |

(i)सुखमनी

(ii)बावनअखरी

(iii)बारहमसा

16. गुरु तेज बहादुर (1622 ई0 -1675 ई0) -

साहित्यिक दृष्टि से उल्लेखनीय संत थे |

17.गुरु गोविंद सिंह (1674 ई0 - 1708 ई0) -

इन्होने दुर्गा सप्तशती का अनुवाद 'चण्डीशतक'के नाम से किया | उनका महत्वपूर्ण ग्रंथ है - 'विचित्रनाटक' |

18.रज्जब -

रज्जब पठान से इनके पिता आमेरनरेश राजा मान सिंह की फौज मे सैनिक थे | इनके सम्बंध मे एक कहानी प्रचलित है कि - जब रज्जब शादी के लिये बारातियों के साथ जा रहे थे तो दूल्हे के वेश मे ही ये दादू महराज के पास पहुँच गये , और दादू जी के दर्शन हुए |

दादू जी के मुख से ये शब्द निकला -

रज्जब तैं गज्जब किया, सिर बाधाँ मौर |

आया था हरिभजन को, करा नरक को ठौर ||

इसी बात पर रज्जब बैरागी हो गये | उन्होने अपने भाई से कहा -

भैया मैं शादी नही करुंगा , आजीवन ब्रहमचारी रहुगाँ | इनके निम्न प्रमुख ग्रंथ हैं -

(i)छप्पय

(ii)सब्बंगी

19. धरणीदास -

ये भोजपुरी भाषा मे अपना संदेश देते थे | इनके प्रमुख ग्रंथ हैं -

(i)प्रेमप्रकाश

(ii)सत्यप्रकाश

20.सुधरादास -

ये मकूकदास के शिष्य थे | इन्होने मलूकदास की जीवनी 'मलूक परिचय' नाम से लिखी |

21.बावरी साहिबा (1542 ई0 - 1605 ई0) -

बावरी 'साहिबा' एक ऊचे घराने की महिला और अकबर को समकालीन थी | इन्होने 'बावरी पंथ' की स्थापना की |

22.लालदास (1540 ई0 - 1648 ई0) -

ये अलवर के निवासी थे | इन्होने 'लालपंथ'की स्थापना की |

23.बाबा लाल दास (1590 ई0 - 1655 ई0) -

ये क्षत्रिय थे | इन्होने 'बाबालाली सम्प्रदाय' की स्थापना की | बडौदा मे उनका एक मठ है जिसे 'बाबालाल का शैल' कहते है | इस सम्प्रदाय का प्रधान स्थान गुरुदासपुर का श्रीध्यानपुर गांव है | सम्प्रदाय के अनुयायियों के अनुसार उनका जन्म स्थान पंजाब प्रांत का कुसूर या कुसपुर नामक गांव था | प्रसिद्ध है कि आठ वर्ष की अवस्था मे ही उन्होने प्रमुख ग्रंथो का अध्ययन कर लिया था |

24.संतपीपा -

संत पीपा पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध मे विद्यमान थे | ये खींची वंश के राजपूत गृहस्थ थे | इन्होनो स्वामी रामानंद से दीक्षा ली थी |

25.संत सेन -

प्रो0 रानाडे ने इनका समय सन् 1450 ई0 के लगभग निर्धारित किया |ये जाति के नाई थे, और रामानंद के शिष्य थे | आदि ग्रंथ मे इनका केवल एक पद संकलित है |

26.संत धन्ना-

इनका जन्म 1415 ई0 निर्धारित किया गया है | ये जाति के 'जाट' थे | इन्होने आत्मानन्द से दीक्षा ली थी | आदि ग्रंथ मे इनके चार पद संकलित है |

27.संत सदना -

ये चौदहवीं शताब्दी के मध्य मे विद्यमान थे | इनकी पदावली काल प्रवाह मे लुप्त हो चुकी है | 'आदि ग्रंथ' मे संकलित इनके एक पद के आधार पर केवल इतना ही कहा जा सकता है कि साध्यके प्रति इनके मन मे अनन्य समर्पण भावना थी |

28.संत बेनी -

संत बेनी का जीवन विवरण प्राप्त नही है | अनुमान लगाया जा सकता है कि ये पन्द्रहवीं शताब्दी मे विद्यमान रहे होंगे | 'आदि ग्रंथ' मे इनके केवल तीन पद संकलित हैं | मूर्ति पूजा और आडम्बरो की इन्होने कटु आलोचना की है

29.जम्भनाथ -

जोधपुर राज्य मे राजपूत परिवार में 1451 ई0 मे इनका जन्म हुआ था | जम्भनाथ ने 'विश्नोई सम्प्रदाय' की स्थापना की |

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य के इतिहास में निर्गुण भक्ति के ज्ञानमार्गी भक्तों को संत कवि कहा गया है | इन संत कवियों द्वारा प्रतिपादित काव्य धारा को संत काव्य कहा जाता है | 'संत' से अभिप्राय उस व्यक्ति या व्यक्तियों के उस समूह से है जिसने सत्यरूप परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया है और शुद्ध जीवन जीते हुए निःस्वार्थ भाव से लोक कल्याण में रत है। हिन्दी में 'संत-काव्य' से आशय है– कबीर आदि निर्गुणोपासक ज्ञानमार्गी कवियों द्वारा रचित काव्य। भक्तिकाल की विषम सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में इन संत कवियों ने ज्ञान की आंधी और प्रेम की बारिश के द्वारा जन सामान्य में आशा की ज्योति विखेरने का अतुलनीय कार्य किया | निर्गुण भक्ति के प्रेममार्गी कवियों को सूफ़ी कवि कहा गया है | संत काव्य परंपरा भक्तिकाल की आरम्भिक काव्यधारा है। इसका संबंध निर्गुण भक्ति से है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे ज्ञानाश्रयी शाखा कहा है। निर्गुण भक्त कवि अधिकांश निम्न जाति के थे। उन्हें मंदिरों में प्रवेश की मनाही थी। ईश्वर से वंचित किये गये इन जातियों ने तब ईश्वर को अपनी कल्पना में गढ़ा, जिसमें ईश्वर के प्रचलित रूप के विरोध की भी भावना थी। इसलिए इस धारा के संत कवियों ने अपनी उपासना का आधार गुणातीत ब्रह्म को बनाया है। संत काव्य तत्कालीन सामंतवादी और रुढ़िवादी परिवेश में मानवतावादी चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति है।

संदर्भ सूची

1. वुडहेड, लिंडा और फ्लेचर, पॉल. रिलीजियन इन द मॉडर्न वर्ल्ड: ट्रेडीशंस एंड ट्रांसफॉर्मेशंस (2001) पृ.71-2. राऊटलेज (यू.के) ISBN 0-415-21784-9"

2.गोल्ड, डेनियल, क्लैन एंड लाइनेज अमंग द संत्स: सीड, सब्स्टांस, सर्विस, in संत मत:स्टडीज़ इन डिवोशनल ट्रेडीशन आफ़ इंडिया in शोमर के. और मैक्ल्योड डब्ल्यू.एच. पृ.305, ISBN 0-9612208-0-5

3.हीज़, पीटर, इंडियन रिलीजियंस: अ हिस्टॉरिकल रीडर ऑफ स्पिरीचुअल एक्सप्रेशन एंड एक्सपीरिएंस, (2002) पृ.359. ISBN 0-8147-3650-5

4.वाउडेविले, चार्लट. संत मत: संतिज़्म इज़ द यूनिवर्सल पाथ टू सैंक्टिटी संत मत:स्टडीज़ इन डिवोशनल ट्रेडीशन ऑफ इंडिया शोमर के. और मैक्ल्योड डब्ल्यू.एच. ISBN 0-9612208-0-5

5.ल्यूइस, जेम्स पी. (1998). सीकिंग द लाइट: अनकवरविंग द ट्रूथ अबाउट द मूवमेंट ऑफ स्पिरीचुअल इन्नर अवेयरनेस एंड इट्स फाऊँडर जॉन-रोजर. हिचइन: मंडेविले प्रेस. पृ॰ 62. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 0-914829-42-4.

6. अलसानी, अली, सिंधी लिटरेरी कल्चर, पोल्लोक, शेल्डन लिटरेरी कल्चर इन हिस्टरी (2003), p.637-8, यूनीवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस, ISBN 0-520-22821-9
7.ज्यर्गसमेयेर, मार्क. द राधास्वामी रिवाइवल पृ.329-55 संत मत स्टडीज़ इन अ डिवोशनल ट्रेडीशन ऑफ इंडिया शोमर के. और मैक्ल्योड डब्ल्यू.एच. ISBN 0-9612208-0-5
8.जे. गोर्डन मेल्टन., एनसाइक्लोपीडिया ऑफ अमेरीकन रिलीजियंस
9. लूसी डू पर्टीज़. "हाओ पीपल रिकॉगनाइज़ करिश्मा: राधास्वामी और डिवाइन लाइट मिशन" के मामले में दर्शन सोशिऑलाजिकल एनालाइसिस: अ जर्नल इन द सोशियोलोजी ऑफ रिलीजियन .